वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 126	Year 15	Volume 11	NOVEMBER 2024 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150

आशीर्वाद : वरदान का प्रतीकात्मक रूप

अभिवादनशीलस्य नित्यम वृद्धोपसेविनः चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्

अर्थात् "जो बालक अपनों से बड़ों या माता पिता को प्रतिदिन प्रणाम या अभिवादन करता है, उसकी चार चीजों में वृद्धि होती है आयु, विद्या, यश और बल।"

हमारी संस्कृति में अभिवादन की परंपरा अनंत काल से चली आ रही है। रामचरितमानस के बालकांड में भगवान श्री राम की दिनचर्या दी गयी है कि वे सबसे पहले प्रातःकाल उठकर अपने से बड़े लोगों एवं गुरुजनों को प्रणाम किया करते थे–

प्रात काल उठि कै रघुनाथा
मात–पिता गुरु नावहिं माथा
आयषु मांगि करहिं पुर काजा देखि चरित हरषइ मन राजा

अर्थात् 'श्री राम प्रातःकाल उठकर माता–पिता और गुरु को प्रणाम करते थे और उनकी आज्ञा लेकर ही सभी कार्य करते थे।' उनका आदर्श चरित्र देख–देखकर राजा दशरथ का हृदय अपने पुत्र के लिए आनंदित हो जाता था।

Contact:
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

आर्य सन्देश।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड
नई दिल्ली
110001

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2022-2024

प्रणाम के भाव से जब भी कोई व्यक्ति अपने से बड़ों के समक्ष झुकता है, तो उसमें स्वत ही विनम्रता व शालीनता के गुण आ जाते हैं। प्रणाम का सीधा संबंध प्रणीत से है जिसका अर्थ है विनीत, नम्र होना और किसी के सामने सिर झुकाना। प्रणीत व्यक्ति अपने दोनों हाथ जोड़कर और उन हाथों को अपने वक्षस्थल से लगाकर बड़ों को प्रणाम करता है। कहा गया है कि दोनों हाथ की अंजलि वक्षस्थल से लगाकर बड़ों को प्रणाम करना चाहिए। ऐसा करने के पीछे यह भी कारण है कि प्रतीक स्वरूप हमारा पूरा अस्तित्व सम्माननीय व्यक्ति के समक्ष समर्पित हो जाता है। वक्षस्थल से हाथ जोड़ने का अर्थ हृदय के संबंध से है। भारतीय परंपरा में इसी प्रकार प्रणाम करने की परंपरा रही है।

प्राचीन काल में गुरुकुलों में गुरु के प्रति शिष्यों का दंडवत प्रणाम करने का विधान था, जिसमें शिष्य, गुरु या अन्य किसी विशेष व्यक्ति के चरणों में साष्टांग लेटकर प्रणाम करते थे। इस तरह के प्रणाम करने का उद्देश्य है कि गुरु के चरणों के अंगूठे से प्रवाहित हो रही ऊर्जा को अपने मस्तिष्क पर धारण किया जाए। इस ऊर्जा के प्रभाव से शिष्य के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगता है। भारतीय धर्म शास्त्रों में ऐसा करने पर गुरु द्वारा हाथ उठाकर आशीर्वाद देने का विधान रहा है। शास्त्रों के अनुसार जब गुरु हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं, तब उनके हाथ की उंगलियों से निकला ऊर्जा का प्रभाव शिष्य के मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है, जो उसके जीवन को प्रभावित करता है। इस आशीर्वाद को ग्रहण करने के लिए शिष्य का कर्त्तव्य है कि गुरु को पूर्ण रूप से समर्पित होकर प्रणाम करें। स्पष्ट है कि गुरु को बिना प्रणाम किये आशीर्वाद स्वरूप ऊर्जा को ग्रहण कर पाना संभव नहीं है।

जब किसी व्यक्ति को प्रणाम किया जाता है तो स्वतः ही उसके अंतःकरण से आशीर्वाद निकलता है। इस आशीर्वाद का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। यह हमारे सम्पूर्ण जीवन में सफलतापूर्वक बदलाव लाने में सहयोग करता है। आशीर्वाद एक तरह से किसी व्यक्ति के अंतर्मन से निकले हुए शुभ भाव होते हैं, जो व्यक्ति को प्रभावित करते हैं, यदि आशीर्वाद या आशीष वचन के साथ मनुष्य की तप शक्ति, संकल्प शक्ति जुड़ी हुई होती है तो ऐसे आशीर्वाद शीघ्र फलित होते हैं और प्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव दिखाते हैं।

आशीर्वाद के चार अक्षर प्रतीक रूप में चार शब्द हैं आयु, विद्या, यश, और बल। जिस शुभकामना से व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है, वही आशीर्वाद है। जिन लोगों को बार–बार आशीर्वाद मिलने पर भी कोई लाभ अर्थात् किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती है, तो इसका तात्पर्य है कि उन्होंने न तो श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और न ही श्रद्धा पूर्वक आशीर्वाद लिया। आशीर्वाद जीवन में तभी प्राप्त हो सकेगा, जब व्यक्ति आशीर्वाद के प्रभाव को धारण कर पाए, यदि व्यक्ति के अंदर ग्रहणशीलता नहीं है या वह किसी वस्तु को ग्रहण करने से इनकार करता है, तो उसे फल स्वरूप कुछ भी नहीं दिया जा सकता। इसी तरह यदि कोई आशीर्वाद दे, लेकिन आशीर्वाद देने वाले व्यक्ति के अंदर यदि अहंकार का भाव होगा तो उस व्यक्ति में विनम्रता नहीं आ सकती, ऐसा व्यक्ति आशीर्वाद का लाभ नहीं ले सकता है।

भारतीय संस्कृति में प्रणाम की परंपरा इसलिए रखी गई है कि उससे व्यक्ति विनम्र बने, न कि अहंकारी। जो व्यक्ति अपने से किसी बड़े व्यक्ति को या महापुरुष को प्रणाम करता है, तो प्रणाम करने का भाव ही व्यक्ति की विनम्रता को प्रकट करता है और यही विनम्रता दूसरों से मिलने वाले आशीर्वाद क ग्रहण करने के योग्य बनाती है। वर्तमान परिदृश्य में प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व में अहंकारिता को नष्ट करके अच्छे आचरण को विकसित करने के लिए नित्य बड़ों को प्रणाम करने की आदत डालनी चाहिए। जिससे भावी पीढ़ी अपने माता–पिता के आशीर्वादस्वरूप आशीष वचनों से हमेशा के लिए बंचित न रहे।

डॉ. पूर्णिमा अग्रवाल

आर्य समाज सेक्टर 9 पंचकुला

अपनी वैदिक संस्कृति संबंधी जानकारी के लिए निम्न साइट पर जाकर देखें:

www.trutharya.org

ARYA SAMAJ SECTOR 9 PANCHKULA

FOR KNOWING ABOUT OUR OLD CULTURE PLEASE VISIT THE FOLLOWING SITE

www.trutharya.org

Raman Mahajan, Mob. : 9465218861

शिमला का **SHARDA**

कामधेनु जल

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए एक असरदार व अदभुत आयुर्वैदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9465680686 या Paytm No. 9465680686

Your present is your own creation

Bhartendu Sood

We live in a country where the vast majority continues to believe that there are things, animate and inanimate both, which are inauspicious in the sense that they impart bad luck. Man over the years has divided animals, birds and even his friends, colleagues and relations in the two categories. One, who are the source of good luck and the others whose mere sight imparts bad luck, though there is no scientific base of such categorization and unfortunate part is that those who are perceived as the source of bad luck, for no fault of theirs, are kept at a distance and are quite often subjected to disdainful glare and gestures.

This behavior is confined not only to illiterate but even the highly educated and those holding high positions practice such unfounded beliefs, most of the time inherited and sometimes supplied by the so called godmen and sorcerers? But, while practicing this, they conveniently forget that as they consider the selected ones as the source of bad luck for them, likewise they themselves are perceived as the source of bad luck by others

A servant in King Akbar's palace had the reputation of bringing ill-luck to whoever sees him as a first thing in the morning. One day, Akbar saw him as he came out of his bedroom. Everything went wrong for Akbar on that day. His grandson fell ill, there were rumours of rebellion and the king injured himself rather badly. Enraged, Akbar ordered that the man be hanged. On hearing the sentence, the servant went to Birbal who enjoyed a reputation of being wordly wise and bold too, to be able to give good counsel to the king, when required. Birbal gave him patient hearing and could see Monarch's whims taking better of the rationality in a snap judgment that was going to cost an innocent his life for no fault of his. Birbal decided to use his acumen to save the life of a poor man and requested the king for a fair trial before the execution of his order, which Akbar granted in view of his high regard for Birbal..

"Your Majesty! 'Did you see this man as the first thing in the morning?" Birbal asked Akbar "I did" answered the King. He now turned to the servant and asked, 'Whose face did you see as the first thing in the morning?"

Trembling, he answered, 'His Majesty's.' Birbal then said, 'Your Majesty, you saw the servant the first thing in the morning and suffered minor mishaps. But this man, who is now near the gallows, saw your face as the first thing. Which is the bigger misfortune in your opinion?'

Akbar realized his mistake and repealed the sentence.

We all need to give a thought as Akbar did to find out whether such practices and beliefs stand the critical scrutiny of reasoning. If not we should lose no time in setting them aside to make our mind free from the issues which often take away our peace of mind, result in suspicion and hatred and in process do not allow us to live in harmony with others. Such unfounded beliefs have done great harm to our society and the worst sufferers are the poor.

Karma is a spiritual law. It is equivalent to Newton's Third Law of Physics, "For every action there is an equal and opposite reaction." In Sanskrit the word karma means "actions" or "deeds." Good karma brings good results and bad karma brings bad results. That is the basic karma theory. Everything that you think, feel and do is recorded in the cosmic hard-drive. As time progresses the data are retrieved and results of those data are calculated and gradually manifested in life.

दिपावली को समझें

पंडित अम्बाराम आर्य

जो वस्तु जैसी है उसको वैसा ही जानना और मानना सत्य कहाता है, उसके विपरीत जानना व मानना असत्य कहाता है। असत्य को मानना ही पाखण्ड और अन्धविश्वास की श्रेणी में आता है।चाहे कोई अपने आपको कितना ही अध्यात्मवा दी माने। पिछले दिनों दीपावली पर्व मनाया गया परन्तु हमें दुःख है कि लोग त्यौहारो की मूल भावना से अपरिचित हैं। हम वेदमत और अपने पूजनीय वैज्ञानिक वैदिक ऋषियों की परम्परा से बिल्कुल अलग हो चुके हैं। सब मनमाना आचरण प्रसारित हो रहा है।

दीपावली को शारदीयन वसस्येष्कि नाम से इस पर्व को मनाया जाता था।महर्षि मनु महाराज कहते हैं– सस्यान्तेनवसस्येष्ट्यातथर्त्वन्तेद्विजोऽध्वरे।।मनुस्मृति४?२६।। अर्थात्नवसस्येष्टि (नव= नवीन, सस्य = फसलवाखेती, इष्ट = यज्ञ) अर्थात नवीन फसल का यज्ञ करने का विधान वैदिक है। इस पर्व को मनाने के लिए कार्तिक बदी अमावस्या तिथि प्राचीन काल से नियत की गई है। इसी को दीपावली पर्व कहते हैं। इसी समय धान की फसल तैयार हो चुकी होती है नये अन्न से यज्ञ हवन करके आहुतियां दी जाती हैं। यज्ञ कुण्ड को देवताओ का मुख कहा जाता है क्योंकि यज्ञ कुण्ड में हवन करते समय अग्नि प्रदीप्त की जाती है जो भी शुद्ध पदार्थों तथा गाय के घी की आहुति दी जाती है वह देवताओं तक पहुंचती है। देवता यानि जो देता है जैसे सूर्य हमें ताप प्रदान करता है चन्द्रमा हमें शीतलता प्रदान करता है वायु हमें श्वास प्रदान करता है इसी प्रकार जलादि भी हमारे लिए हितकारी हैं तथा अन्नादि औषिधियां और वनस्पतियां इन्हीं के प्रताप से हमें प्रदान होते हैं उनको यज्ञ के द्वारा ही पवित्र किया जाता है। इसलिए वेद भगवान व ऋषियों का कहना है प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन यज्ञ हवन करना चाहिए। जो नहीं करता वह पाप का भागीदार होता है। हम मल मूत्र श्वास प्रश्वास के द्वारा वातावरण को दूषित करते हैं। यदि हम यज्ञ हवन करके वातावरण को पवित्र नहीं करेंगे तो पाप के भागीदा रहोंगे। केवल गन्दगी फैलाना हमारा काम नहीं है अपितु वातावरण को पवित्र रखना भी हमारा परमकर्तव्य है। दीपावली पर्व वर्षा तक बाद ही मनाई जाती है। वर्षा के कारण जगह–जगह कीचड व गन्दगी फैल जाती है इस कारण मच्छर आदि विषैले जन्तु पैदा हो जाते हैं दूषित वातावरण के कारण मलेरिया, मौसमी बुखार आज कल डैग्गू जैसी भयानक बीमारी पैदा हो जाती है। घरों की सफाई पुताई करके यज्ञ हवन करके वातावरण को शुद्ध किया जाता है। प्राचीन काल में गांवों व नगरों में स्थान–स्थान पर बडे–बडे यज्ञो का आयोजन किया जाता था और गौ का शुद्ध घृत तथा कई प्रकार के सुगन्धित, रोगनाशक, पुष्टि कारक पदार्थों का मिश्रण करके बडी श्रद्धा से यज्ञ हवन किया जाता था। सडको के किनारे बडे–बडे दीपकों में घी भरकर उनको जलाया जाता थाता कि वातावरण पवित्र हो तथा राहगीरों को प्रकाश की सुविधा हो।

यज्ञ हवन करना त्याग का द्योतक है। जब कोई यज्ञ हवन करता है उसका लाभ मित्र अमित्र सभी को प्राप्त होता है। वैसे यज्ञ का विधान तीन चीजों में पूर्ण होता है। पहला अग्नि हो त्रहवन करना दूसरा स्वाध्याय, वैदिक विद्वानो को संगतीसरादान। हमारे ऋषियों ने घोषणा की है– यज्ञो वैसर्व श्रेष्ठतमकर्मः अर्था त्यज्ञ ही सर्व श्रेष्ठ कर्म है।

सभी जन विचार करें कि क्या हम वेद और वैदिक ऋषियों के अनुकूल कर्म कर रहे हैं यदि कर रहे हैं तो अपने को सौभाग्यशाली समझें यदि नहीं तो हम वेद व वैदिक ऋषियों की अवहेलना कर रहे हैं और निश्चित ही पाप के भागीदार बन रहे हैं।

हमें पर्वों को उसके मूल भावना के अनुरूपमनाना चाहिए यही व्रत लेना चाहिए। हमारे लिए हर्ष का विषय है कि हम भारत जैसे वैदिक संस्कृति और वैदिक ऋषियों के देश में पैदा हुए हैं। ओ३म्शम्

पडित अम्बाराम आर्य जी बहुत उच्च कोटी के वैदिक विद्वान है, जो कि स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो पर ही चलते है व प्रचार करते है।

M. : 8077035401

प्यार को, मोह के जाल में न बदलें

भारतेन्दू सूद

जहां प्यार मनुष्य के लिये एक शक्ति है वहीं मोह उसकी कमज़ोरी व शत्रु है। शास्त्रों में मोह को व्यक्ति का उतना ही बड़ा शत्रु बताया है जितना कि काम, कोध, लोभ व अहंकार को। हमारा मन असंख्य इच्छाओं से भरा रहता है। धन, वैभव, प्रतिष्ठा व नाम की ईच्छा कभी पूर्ण होती प्रतीत नहीं होती व अक्सर यह किया पहले असन्तोष, फिर कोध व अन्त में निराशा को जन्म देती है। प्रकृति व जीवन के सौन्द्रय के सुख का आनन्द लेने के स्थान पर हम इन भौतिक ईच्छाओं के पीछे भागते रहते हैं और यह दौड़ कभी खत्म नहीं होती, जब कि देखते ही देखते यह जीवन खत्म हो जाता है।

यह भी सम्भव नहीं है कि हम किसी भौतिक वस्तु की इच्छा न करें। भौतिक ईच्छाओं के बिना तों व्यक्ति उन्नती ही नहीं कर सकता। वेद शास्त्र भी भौतिक, मानसिक व अध्यात्मिक तीनों प्रकार की उन्नती पर बल देते है। वेद में धन ऐश्वर्य के स्वामी बनने के लिये प्रार्थना करने के लिये कहा गया है। पर यह अवश्य है कि हम भौतिक, मानसिक व अध्यात्मिक तीनों के बीच सन्तुल्न बना कर रखें। ऐसा करते हुये जीवन के तीसरे आश्रम में कदम रखने के बाद हम अपनी भैतिक ईच्छाओं को कम करते जायें। ऐसा करने पर दो चीजें होगीं पहला इच्छाऐं बढ़नी बन्द हो जायेंगी दूसरा यदि आप में तप, त्याग व ईश्वर का सनिध्य है तो इच्छाऐ आहिस्ता– आहिस्ता खत्म हो जायेंगी।

हमारा मोह चाहे भैतिक वस्तुओं से है या प्राणीयों से, यह न केवल हमें नुकसान पहुंचाता है अपितु उस को भी नुकसान पहुंचाता है जिस के साथ हम मोह करते हैं, खास कर जो यह नहीं जानते कि संसार में हर चीज नश्वर है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि धन हर काम के लिये चाहिए। हमें धन को फैंकना नहीं है, फैंकना है धन के साथ मोह व लगाव को व धन के लोभ को। धन व दूसरी भौतिक वस्तुऐं साधन होने चाहिए न की हमारा उदेश्य। यह भी सत्य है कि हम अध्यात्मवाद को तभी अच्छा समझ सकते हैं जब हम भैतिकवाद से गुजर चुके होते हैं। जब संसार के सब भौतिक सुख प्राप्त कर के भी व्यक्ति को खोखलापन महसूस होता है तो उस के पग अध्यात्मवाद की और बढ़ते है और वह बाहर की बजाये अन्दर की और देखना शुरू करता है। जिसे कहा गया है——(to look inside)

कई बार हम अपने मोह के कारण बच्चों की प्रगति के रास्ते में बाधा बन जाते हैं। मूल शंकर के माता पिता का मोह भी ऐसा ही था। एक दिवान के पुत्र होने के नाते सब सुख व एंश्वर्य उसके कदमो पर था। पर उसने उस मोह को ठुकरा दिया व वह लोगों को रास्ता दिखाने वाला दयानन्द बना। महान काव्य रचईता तुलसीदास की कहानी कौन नहीं जानता——उनकी पत्नि के इन शब्दों ने कि जितना प्यार मोह आप मुझ से करते हो वही यदि भगवान राम से करो तो , जीवन बदल जायेगा। इस लिये अपने प्यार को मोह के जाल में न बदलें। आचार्य चाण्क्य नीतिवचन में कहते है मोह के समान शत्रु नही। गुरूवर रविन्दर नाथ टैगोर ने बहुत ठीक कहा है——"प्यार तो स्वतन्त्रता देता है न की बन्धन"

हम अपने प्रिय जनों से जिनमें हमारे अपने बच्चे भी आतें प्यार करें पर मोह नहीं। मोह एक स्वार्थपूर्ण प्यार है। मोह में फंसा व्यक्ति अकसर छला जाता है। शास्त्रों में एक कहानी आती है——एक राजा की दो रानीयां थी। छोटी वाली रानी बड़ी रानी से न केवल उमर में काफी छोटी थी पर उससे कहीं अधिक सुन्दर थी। जब की बड़ी रानी गम्भीर रहने वाली थी और राजा का शासन व्यवस्था में हाथ बटवाती थी। एक बार ऐक सन्यासी राजा के पास कुछ समय ठहरे। अपनी सेबा से

प्रसन्न होकर जाती बार उन्होने राजा को एक गिलास दिया और कहा जिस के पास भी यह गिलास रहेगा वह सदा जवान रहेगा। राजा अपनी छोटी रानी के मोह में फंसा हुआ था, उसने सोचा वह सदा जवान रहे इस से अच्छी और कोई बात नहीं और वह गलास राजा ने छोटी रानी को दे दिया व साथ में ही उस गलास का राज भी बता दिया। राजा ने इस बात का तनिक भी ख्याल न रखा कि बड़ी रानी के साथ उसने जीवन के कंहीं अधिक बसंत गुजारे है और अगर उसकी राज्य की व्यवस्था अच्छी है तो उसका असली श्रेय बड़ी रानी को ही जाता था।

छोटी रानी के नजायज सम्बन्ध राज्य के सेनापति के साथ थे। वह उस के मोहजाल में फंसी हुई थी। उसने सोचा सेनापति सदा जवान रहे इस से अच्छी और कोई बात नहीं और वह गलास रानी ने सेनापति को दे दिया व साथ में ही उस गलास का राज भी बता दिया। सेनापति राज्य की मुख्य नर्तकी पर फिदा था उसने वह गलास वैसा ही सोचकर नर्तकी को दे दिया। नर्तकी चाहे नर्तकी थी पर ज्ञानवान थी अज्ञान से पैदा हुए मोहजाल को समझती थी। उसने विचार किया और इस निष्कर्श पर पहुंची कि एक व्यकित जिस के पास यह गलास रहना चाहिए वह है बड़ी रानी जिस के कारण राज्य की व्यवस्था इतनी अच्छी थी अगर वह दीर्घ आंयु प्राप्त करती है तो राज्य के लिए इस से अच्छी बात और कोई नहीं हो सकती और उसने वह गलास रानी के चरणों में भेंट कर दिया। रानी के लिये उसके पति से बड़ कर कोई नहीं था व उसने तुरन्त वह गलास राजा को तोहफे में दे दिया। राजा स्तबद रह गया। उस ने जब वही गलास देखा तो उसके पैरों तले ज़मीन खिस्क गई उसकी आंखे खुल गई उसे मालुम हो गया कि कैसे वह अपने मोह के कारण छला जा रहा था। राजा ने वैराग ले लिया पर हम सब वैराग नहीं ले सकते। जो हम कर सकते हैं वह है प्यार को, मोह के जाल में न बदलें।

धैर्य कभी न खोंए, आशावादी रहें

सभी शास्त्रों में धैर्य को ईश्वरिय गुण माना है। जिसमें धैय है वह बहुत सी गलतियों से बच जाता है। संत कबीर भी एक शास्त्र में यही कहते है।–धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होए । माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आए फल होए।अर्थात धैर्य रखने से ही ठीक समय पर काम पूरे होते है।

मुश्किल परिस्थिती में धैर्य मनुष्य की बहुत वड़ी शक्ति बन जाता है। जार्ज बरनर्ड शाह ने इस बात को बहुत सुन्दर कहा है––दो चीजों से व्यक्ति का चरित्र सामने आता है, आपका धैर्य जब आप सब कुछ खो चुके है दूसरा आपका दूसरों के प्रति रवैया कैसे है जब आपके पास सब कुछ है। जिस में धैर्य है उस में बहुत से दूसरे दैविक गुण स्वयं आ जाते है। कहते हैं ईश्वर भी उसके साथ होता है जिसमें धैर्य होता है। हम में अधिकतर जब काम नहीं होता तो कोद्धित हो कर दूसरों को या फिर ईश्वर को ही कोसने लगते है।

कहते हैं सिकन्दर महान जब दुनिया को जीतता हुआ भारत के नजदीक पहुंचा तो उसके सलाहकार ने परामर्श दिया कि सेना लगातार कई महीने से युद्ध करते करते थक चुकी है, ऐसे में अच्छा होगा कि हम अपने आगे के मोहिम को कुछ समय के लिए रोक कर बापिस चलें, कुछ समय बाद सेना में जब फिर से उत्साह जाग जाएगा तो हम भारत पर कूच कर देंगे। परन्तु सिकन्दर शिघ्र अति शिघ्र विश्व विजयता कहलाना चाहता था और उस ने अपने सलाहकार की बात को अनसुना कर के भारत में प्रवेश कर दिया जहां कुछ हद तक उसे सफलता तो मिली परन्तु सेना का नुकसान बहुत अधिक हो गया और वह इस योग्य न रहा कि आगे बड़े। अब बापिस जाना ही उसके पास एक विकल्प रह गया था। उसका और सेना का उत्साह गिर चुका था, ऐसे मे रास्ते में ही उसे जानलेवा बिमारी ने घेर लिया और उसका अन्त हो गया। यदि उसने धैर्य से काम लिया होता तो शायद कहानी और होती।

हर हाल में मानव मात्र की सेवा को महत्त्व देने वाला ही होता है वास्तविक विजेता

सीताराम गुप्ता

गुरु नानकदेव जी के जीवन का एक बड़ा मशहूर क़िस्सा है। जब गुरु नानकदेव जी के पिताजी ने उन्हें कुछ रुपए देकर कोई चोखा सौदा करने के लिए भेजा तो वे उन रुपयों से साधु–संतों को भोजन करवाकर वापस घर लौट आए। पूछने पर उन्होंने कहा कि मेरे विचार से इससे अच्छा खरा सौदा और कोई हो ही नहीं सकता। ऐसा खरा और सच्चा सौदा विरले ही लोग कर पाते हैं और जो ऐसा कर पाते हैं वे असाधारण होते हैं। परिवार का भरण–पोशण करने, जीवन में आगे बढ़ने अथवा अपना नाम करने के लिए हर व्यक्ति को कुछ न कुछ काम करना ही पड़ता है। लेकिन इस काम के दौरान कई बार ऐसे क्षण आ जाते हैं जब ये निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि ये काम किया जाए अथवा नहीं। ऐसे क्षणों में गुरु नानकदेव जी की तरह जो सही निर्णय ले पाते हैं वे अपने जीवन में महानता के स्तर को छू लेते हैं।

वर्ष 1988 में सिओल ओलंपिक में पदक हासिल करने के लिए लॉरेंस लेम्यूक्स एक दषक से भी अधिक समय से प्रषिक्षण ले रहे थे और निरंतर कठिन अभ्यास कर रहे थे। आखिर वो घड़ी आ पहुँची जब लॉरेंस लेम्यूक्स का सपना साकार होने में थोड़ा सा ही समय शेष रह गया था। लॉरेंस लेम्यूक्स के गोल्ड मेडल जीतने की प्रबल संभावना थी लेकिन जैसे ही प्रतिस्पर्धा प्रारंभ हुई मौसम ने अचानक रंग बदलना शुरू कर दिया। तेज़ हवाएँ चलने लगीं और उनके कारण शांत समुद्र में ऊँची–ऊँची लहरें उठने लगीं। ऐसे में कोई भी हतोत्साह हो सकता था लेकिन लॉरेंस लेम्यूक्स ने हार नहीं मानी और ऊँची–ऊँची लहरों के बीच निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढने लगे। अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद लॉरेंस लेम्यूक्स ने शुरुआती बढ़त हासिल कर ली। उनका गोल्ड मेडल लगभग निश्चित हो गया था।

लेकिन ये क्या? विषम परिस्थितियों के कारण उनसे एक चूक हो गई। ऊँची–ऊँची लहरों के कारण दिशा बतलाने वाले संकेतों को देखना असंभव हो गया और लॉरेंस लेम्यूक्स एक संकेत चूक कर आगे बढ़ गए। लॉरेंस लेम्यूक्स को आगे बढ़ने से पहले उस चूके हुए संकेत तक आने के लिए विवश होना पड़ा और वहाँ से पुनः रेस शुरू करनी पड़ी। इस सबमें समय की कितनी बर्बादी हुई होगी और इसके कारण पदक हासिल करने के नज़दीक पहुँचना कितना मुश्किल हो गया होगा अनुमान लगाना असंभव नहीं। इस चूक और अन्य कठिनाइयों के बावजूद लॉरेंस लेम्यूक्स शानदार प्रदर्षन करते हुए दूसरे स्थान तक जा पहुँचे। उन्हें रजत पदक मिलने की पूरी संभावना नज़र आ रही थी और वे तेज़ी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। उनका उत्साह देखने लायक था।

जब लॉरेंस लेम्यूक्स तेज़ी से अपनी नाव चलाते हुए सही दिशा में आगे बढ़ रहे थे तो उन्होंने देखा कि बीच समुद्र में सिंगापुर के नाविकों की एक नाव उलटी पड़ी है। एक आदमी जो बुरी तरह से घायल हो गया था पलटी हुई नाव की पैंदी को किसी तरह से जकड़े हुए पड़ा था। नाव से कुछ ही दूरी पर एक अन्य व्यक्ति बहता हुआ जा रहा था। समुद्र की स्थिति अब और भी विकराल हो चुकी थी। लॉरेंस लेम्यूक्स एक अत्यंत अनुभवी नाविक थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि सुरक्षा नौका अथवा बचाव दल के आने तक ये बहता हुआ व्यक्ति बहते–बहते दूर चला जाएगा और उलटी हुई नाव के ऊपर पड़ा व्यक्ति भी जल्दी ही समुद्र की विषाल लहरों से टकराकर नीचे गिर पड़ेगा और बहने लगेगा। स्थिति ऐसी थी कि तत्क्षण सहायता न मिलने पर दोनों का ही बच पाना असंभव प्रतीत हो रहा था।

लॉरेंस लेम्यूक्स के सामने दो विकल्प थे। पहला विकल्प तो ये था कि लॉरेंस लेम्यूक्स इस दुर्घटनाग्रस्त नाव के चालकों को नज़रंदाज़ करके अपना पूरा ध्यान केवल अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपनी नौका और रेस पर केंद्रित करते जिसके लिए उसने वर्शों तक कड़ा परिश्रम किया था। यह स्वाभाविक भी था और इसमें असंख्य संभावनाएँ और आर्थिक हित भी निहित थे।

लेम्यूक्स के समक्ष दूसरा विकल्प था दुर्घटनाग्रस्त नाव के चालकों की मदद करना। उसे याद आया कि समुद्र में उतरने वाले हर व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण कर्तव्य है सबसे पहले संकटग्रस्त व्यक्तियों का जीवन बचाना। यद्यपि उसका मुख्य लक्ष्य किसी भी क़ीमत पर प्रतिस्पर्धा जीतना था जिसके लिए उसने दिन–रात कठोर अभ्यास किया था और जिसके लिए उसके देशवासी उत्सुकतापूर्वक उसके विजयी होने की प्रतीक्षा कर रहे थे लेकिन लॉरेंस लेम्यूक्स ने बिना किसी हिचकिचाहट के फ़ौरन अपनी नाव उस दिशा में मोड़ दी जिधर उलटी हुई दुर्घटनाग्रस्त नाव समुद्र की विकराल लहरों में हिचकोले खा रही थी।

लेम्यूक्स ने बिना देर किए दोनों नाविकों को एक एक करके अपनी नाव में खींच लिया और तब तक वहीं इंतज़ार किया जब तक कि कोरिआ की नौसेना आकर उन्हें सुरक्षित निकाल नहीं ले गई। इसके बाद लॉरेंस लेम्यूक्स ने पुनः अपनी रेस शुरू की लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मेडल उनके हाथ से फिसल चुका था। लॉरेंस लेम्यूक्स इस प्रतिस्पर्धा में बाईसवें स्थान पर आए। इसमें संदेह नहीं कि यदि वो अपने मूल लक्ष्य से विचलित नहीं होते तो निष्चित रूप से पदक हासिल करते। लॉरेंस लेम्यूक्स ने अपने जीवन की एकमात्र महान उपलब्धि को अपने हाथ से यूँ ही क्यों फिसल जाने दिया? इसका सीधा सा उत्तर है लॉरेंस लेम्यूक्स के जीवन मूल्य। लॉरेंस लेम्यूक्स के जीवन मूल्य इस तथ्य पर निर्भर नहीं थे कि विजेता होने के लिए ओलंपिक मेडल प्राप्त करना ही एकमात्र विकल्प है। लॉरेंस लेम्यूक्स ने अपने जीवन में भौतिक उपलब्धियों की बजाय उदात्त जीवन मूल्यों को महत्त्व दिया। यह जीवन मूल्य था हर हाल में दूसरों की मदद अथवा करुणा का भाव।

अपने करुणा के उदात्त भाव की वजह से लॉरेंस लेम्यूक्स दो व्यक्तियों को मृत्यु के मुख में जाते देख व्यथित हो उठे। इस व्यथा ने लेम्यूक्स को उनकी मदद करने की प्रेरणा दी और उनकी मदद से वे जीवित बच सके। लॉरेंस लेम्यूक्स के जीवन में व्याप्त उदात्त जीवन मूल्यों के कारण उसकी प्राथमिकता बदल गई। लॉरेंस लेम्यूक्स को मेडल जीतने की बजाय किसी की जान बचाना अधिक महत्त्वपूर्ण लगा। उन्होंने यही किया भी। लोग ऐसी स्थिति में प्रायः द्वंद्व में फँस जाते हैं और सही निर्णय नहीं ले पाते। ऐसे में अधिकांष व्यक्ति प्रायः व्यक्तिगत लाभ देखते हैं। अनिर्णय की स्थिति में कई बार दोनों ही स्थितियाँ बेकाबू हो जाती हैं अथवा हाथ से निकल जाती हैं लेकिन लॉरेंस लेम्यूक्स ने ऐसा नहीं होने दिया। लॉरेंस लेम्यूक्स ने तत्क्षण निर्णय लेकर उसे क्रियान्वित कर डाला।

ओलंपिक के इतिहास में असंख्य लोगों ने मेडल हासिल किए हैं। कई मेडल विजेता अपने अच्छे प्रदर्शन और अपनी अन्य विषिश्टताओं के कारण चर्चित भी कम नहीं हुए लेकिन मेडल न मिलने पर भी जो सम्मान लॉरेंस लेम्यूक्स को मिला वह अद्वितीय है। लॉरेंस लेम्यूक्स को प्रतिस्पर्धा में तो कोई पदक नहीं मिल सका लेकिन अंतरराश्ट्रीय ओलंपिक कमेटी द्वारा लॉरेंस लेम्यूक्स को उनके साहस, आत्म–त्याग और खेल भावना के लिए पियरे द कूबर्तिन पदक प्रदान किया। बाद में ये पूछने पर कि क्या ओलंपिक मेडल खोने पर उन्हें कभी अफसोस भी हुआ तो लॉरेंस लेम्यूक्स ने कहा कि यदि उनके जीवन में दोबारा ऐसी स्थिति आती है तो वे हर हाल में उसे दोहराना पसंद करेंगे। सच किसी का जीवन बचाने से अच्छी प्रतिस्पर्धा हो ही नहीं सकती। लॉरेंस लेम्यूक्स की करुणा की भावना व वास्तविक मदद ने उसे अपने देष के लोगों के दिलों का ही नहीं दुनिया के लोगों के दिलों का सम्राट बना दिया।

लेखक-परिचय :

सीताराम गुप्ता का जन्म वर्श 1954 में दिल्ली के एक गाँव नांगल ठाकरान में हुआ था। उन्होंने हिंदी व अंग्रेज़ी के अतिरिक्त रूसी, उर्दू, फ़ारसी, अरबी व पंजाबी भाशाओं का अध्ययन किया है। सीताराम गुप्ता की प्रमुख पुस्तकें हैं "मन द्वारा उपचार" व 'मेटामॉर्फ़ोसिस'। नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली) में द स्पीकिंग ट्री व दैनिक ट्रिब्यून (चंडीगढ़) में अंतर्मन में भी वे निरंतर स्तंभ लेखन कर रहे हैं। प्रमुख समकालीन पत्र–पत्रिकाओं में साहित्य तथा भाशा विशयक लेख, व्यंग्य, कथा–साहित्य, निबंध व कविताएँ तथा आध्यात्मिक उपचार, व्यक्तित्व विकास व मनुश्य के संपूर्ण रूपांतरण पर नियमित रूप से रचनाएँ प्रकाषित हो रही हैं।

सीताराम गुप्ता,ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,दिल्ली – 110034

मोबा0 नं0 9555622323

पंजाब सरकार ने ऋषि निर्वाण दिवस पर महान ऋषि को याद किया

मैं अक्सर देखता था कि पंजाब सूबे की सरकार हर सम्प्रदाय व धर्ममत के महापुरूष के स्मृति दिवस पर सभी मुख्य समाचार पत्रों में उन का बड़ा चित्र देकर अपने श्रद्धा सुमन देती है परन्तु आर्य समाज के किसी भी महापुरूश को याद नहीं किया जाता जब कि आर्य समाज का पंजाब के जागरण खासकर शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान है। पंजाब में न केवल 100 से भी अधिक आर्य समाज है बल्कि हर कस्वे शहर में आर्य और डी ए वी विद्यालय हैं।

इस भेदभाव को देखते हुए मैं अक्सर मुख्य मन्त्री को पत्र लिखकर अपना रोष प्रकट करता था।

इस बार रिषी निर्वाण दिवस पर जब उनका चित्र सभी मुख्य अखवारों में छपा तो मुणे संतोष था व खुशी थी। मैं बहुत माामुली व्यक्ति हूं और नहीं कह सकता कि मेरे प्रयत्नों से यह हुआ परन्तु मैने अपने पिता जी से यही सीखा कि जहां भी कुछ गलत है अपनी आवाज उठाओ। आप की आवाज कभी न कभी असर करेगी। आवश्यकता यह है कि हम अपने परिवार को ही महत्व न देकर, समाज के लिए भी निस्वार्थ समय निकालते रहें।

सपांदक

What is politics ?

When most of us are still busy discussing the US Presidential poll results, it is a good idea to read and gain some wisdom and smile :

A Russian Jew was finally allowed to emigrate to Israel. At Moscow Airport, Customs found a Lenin statue in his baggage and. asked, "What is this?"

The man replied, "What is this ! Wrong question comrade. You should have asked, 'Who is he ?' This is Comrade Lenin - who laid the foundations of Socialism and created the future and prosperity of the Russian People. I am taking it with me as a memory of our dear Hero."

The Russian Customs Officer let him go without further inspection.

At Tel Aviv airport, the Israeli Customs Officer also asked him, "What is this ?" *He replied, "What is this ? wrong question, Sir. You should be asking - Who is this ? This is Lenin, the bastard, who caused me, a Jew, to leave Russia. I take this statue with me so, I can curse him every day."*

The Israeli Customs Officer, "I apologize Sir, you are cleared to go." Settling into his new House, he put the statue on a Table, and to celebrate his immigration, he invited his friends and relatives to dinner. *One of his friends asked, "Who is this ?"*

He replied, "My dear friend, "Who is this ?" is a wrong question. You should have asked, "What is this ?". This is ten kilograms of solid gold that I managed to bring with me without paying any Customs duty and Tax"

MORAL :-- Politics is when you can tell the same thing in different ways to fool different audience, and steal their money, and allow yourself to look good in every way.

A lesson from Steve Job

According to Tim Cook, Apple Inc current CEO, Steve job had two great qualities. First adaptability and second ability to change his mind set. This is the one reason why Apple has maintained its leadership in consumer technology.

Steve's quality is outstanding because most of our leaders remain too attached to their past views and want to force the enterprises they join without looking at their relevance in the new environment.

Another thing that the leaders can learn from Steve is his obsession with simplicity. Steve taught that making things simple was far more difficult than making them complex. For him food was a means to keep the body functioning, not the end for which we may spend hours looking for a reputed eatery or restaurant.

आचार्य कौन हो ?
महर्षि दयानन्द की पुस्तक व्यवहारभानु व आर्योदेश्यरत्नमाला से

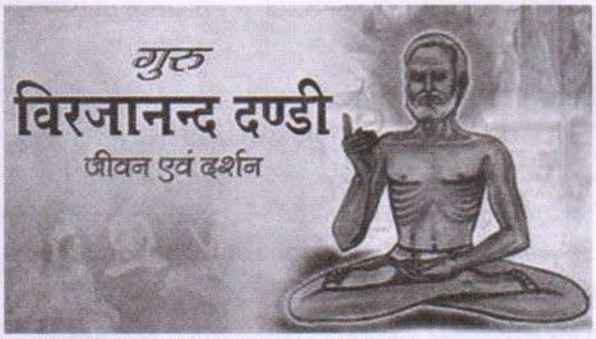

जिसको परमात्मा और जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान हो। जो आलस को त्याग कर सदैव उद्यमी रहे। धार्मिक हो और कोई भी प्रलोभन उसे धर्म के रास्ते से अलग न कर सके। जो धर्मयुक्त कार्य करने में तत्पर रहे और ईश्वर, वेद और धर्म में जिसका अटूट विश्वास रहे। धर्म को जानने में व धर्म का ज्ञान लेने में जिसकी जिज्ञासा रहे और इस योग्य बन गया हो कि धर्म के बारे में दूसरों के प्रश्नों का समाधान व तर्क कर सके।

जो ऐसे पदार्थो की ईच्छा न करे जो उसे मानवता से दूर ले जाएं। दुखों से घवराने वाला न हो व किसी भौतिक वस्तु के दुख पर शौक न करे। जिस में दुष्टों के विरूद्ध आवाज उठाने का साहस हो व विद्वानों व धर्मयुक्त व्यक्तियों की रक्षा करते में तत्पर रहे।

जो विद्यार्थियों को अत्यन्त प्रेम से विद्या व धर्मयुक्त व्यवहार की शिक्षा दे और विद्यार्थियों को शिक्षित करने में तन मन व धन लगा दे ।

जहां ऐसे सत्पुरूष पढ़ाने वाले हो और बुद्विमान जिज्ञासु पढ़ने वाले हों वहां विद्या और धर्म की बृद्धि होती है और आनन्द बढ़ता है।

कैसे मनुष्य आर्चाय व उपदेशक नहीं होने चाहिए

जो धमण्डी व अंहकारी है, बिना योग्यता व परिश्रम के बड़ी ईच्छाएं करने वाला है, अथार्त मूर्ख है। जिसे इस बात का ज्ञान न हो कि कि सभा में कहां पर स्थान ग्रहण करना है।

विद्यार्थी व आचार्य को इन दोषों से मुक्त होने चाहिए

आलस्य, नशा करना, मूढ़ता, चपलता व्यर्थ इधर उधर की बातें करते रहना, अभिमान व लोभ यह सात दोष विद्याथ्रियों के दुश्मन है। महाभारत में विदुर युधिष्टर से कहते हैं––जो मनुष्य जन्म से लेकर मरणपर्यन्त ब्रहमचारी रहता है उसमें सभी शुभ गुण होते है।

जो नित्य सत्य में रमण करते हैं, जिन्होने इन्द्रियों को वश में किया होता है, शान्त आत्मा होते है,वेद व दूसरे सत्य शास्त्रों का अध्यन करते हैं, संसारिक काग्र करते हुए भी परमात्मा की उपासना में रहते हैं, ऐसे मनुष्य बुरे कृत्यों और दुष्टों को नष्ट कर सब को सुख देने वाले होतें हैं। ऐसे मनुष्य ही उतम अश्यापक और उतम विद्यार्थी बन सकते है।

इसके विपरीत जो विद्याा का सम्मान नहीं करते, विद्वानों की सेवा नहीं करते, जिन में धैर्य की कमी होती है व अपनी

प्रशंसा में ही सुखी रहते हैं, वे विद्याा को प्राप्त नहीं कर सकते न ही अच्दे अध्यापक बन सकते है।

शिक्षा किसे कहते है?

जिस द्वारा मनुष्य विद्याा आदि शुभ्गुणों को प्राप्त करे और अविद्या व दोषों से मुन्ति प्राप्त कस सके उसी को शिक्षा कहना उचित है।

विद्या व अविद्या में क्या फर्क है ?

जिस द्वारा पदार्थ का स्वरूप यथावत जान सकें उसे विद्या कहा है और जिस से पदार्थ के स्वरू‍ का ठीक ज्ञान न हो उसे अविद्या कहते है। विद्या स्वयं का व दूसरों का उपकार करती है जब कि अविद्या स्वयं व दूसरों का दोनों का नुकसान करती है। भारत वेदों के ठीक ज्ञान के अभाव के कारण जिसे की अविद्या कहते है, सदीयों तक गुलाम रहा और यहो के लोगों ने तरह तरह के दुख भोगे।

विद्या की प्राप्ती व अविद्या को खम्त करने के लिए मनुष्य को वेदों का ज्ञान लेना चाहिए व 25 वर्श या जब तक वह शिक्षा प्राप्ती में लगा है ब्रहमचर्य का पालन करना चाहिए।

ब्रहमचारी कौन है ?

जो जितेन्द्रिय हो कर ब्रहम को जाने अर्थात वेदविद्या की प्राप्ती के लिए आचार्य कुल मे जाकर विद्या ग्रहएा करे।

यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज सैक्टर 22 के उपप्रधान श्री यशवीर ने अपनी शादी के 50 वर्ष पूरे होने पर **महर्षि दयानन्द द्वारा काशी में लिखी पुस्तक व्यवहारभानु व आर्योदेश्यरत्नमाला को प्रकाशित कर सभी आर्य सहित्य प्रेमियों में बांटा। इस से बेहतर शादी की ५० वीं वर्षगांठ मनाने का शायद और कोई तारिका नहीं हो सकता।** श्री यशवीर को वैदिक थोअस की बधाई व उनके लम्बे विवाहिक जीवन व अच्छे सवास्थय की।

श्री यशवीर आर्य अपनी धर्म पत्नी के साथ

पहली नमस्ते उस पिता को जिस ने जगत् बनाया है,
दूसरी नमस्ते माता पिता को जिन्होंने जन्म देकर पाल पोस कर इस योग्य बनाया।
स्मृति दिवस 1 दिसम्बर रविवार को आर्य समाज मन्दिर सेक्टर 22 डी चण्ड़ीगढ़ में। समय 9 से 11, हवन व सत्संग। उसके बाद ऋषि लंगर। आप परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

नीला, भारतेन्दु व परिवार 9217970381, 9465680686

Dr. Bhupinder Nath Sood (Shimla)
1923-1999
Smt. Sharda Devi Sood
1930 - 1990

Time to remember Justice SH Kapadia----
Former Chief Justice of India

Bhartendu Sood

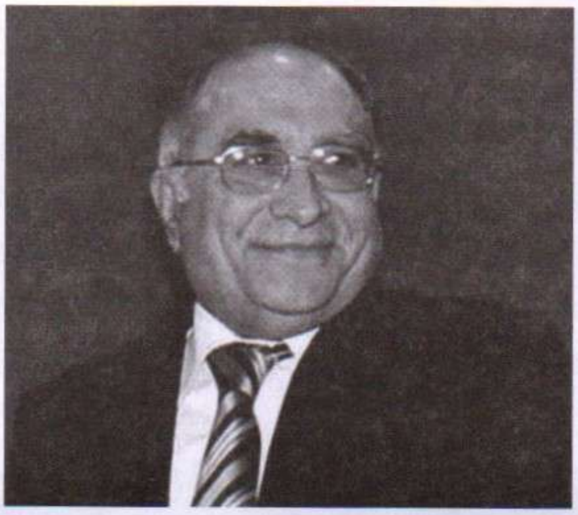

Even the critics of the present CJI Dhanajaya Y Chandrachud will agree that he is a man of flawless integrity and his stint as the Chief Justice of India has been blemishless. But, his recent gesture of inviting the Prime Minister to a private religious ceremony at home invited flak from some quarters and it snowballed into a political controversy. However, I'm inclined to believe that he could have saved himself from this situation only if he had remembered what Justice S.H Kapadia, the former Chief Justice of India had said about the conduct of Judges. While delivering the MC Setalvad Memorial lecture on Judicial ethics in April 2011 Kapadia had said, "A judge must inevitably choose to be a little aloof and isolated from the community at large. He should not be in contact with lawyers, individuals or political parties, their leaders or ministers unless it be on purely social occasions. Judges and lawyers should work like a horse and live like a hermit"

In his pursuit of flawless integrity, Kapadia had transformed himself into a hermit.. When Forbes India sought to interview him for this profile, the CJ's office said the strict code of conduct binding Supreme Court judges does not allow him to agree. Kapadia's personal code of conduct was more severe. Retired Justice VR Krishna Iyer told Forbes India that he had gathered from his colleagues that he was too dignified to even meet other judges, rarely meets anybody at random and when he speaks he is taciturn.

Kapadia did not accept even official invitations if they fell on a working day. He once rejected an invitation to represent India at a conference of the Commonwealth Law Association in Hyderabad because it fell on a working day. Kapadia had practically dedicated his life to the profession, rarely taking holidays even and restored the confidence and pride in the Supreme Court of India. By the time Kapadia, who had risen from the position of a class IV employee to the highest law officer, hung up his cloak and collar on September 29, he left an indelible mark on India's judicial history.

I strongly believe that his life history shold be the part of the curricula of LLB course and every Judge should read the life of the former Chief Justice before taking an oath as Justice Kapadia's life itself is a code of conduct for the judges as rightly summed up by Former Justice VR Krishna Iyer: "While I have seen during the last 97 years of my life among good judges with great credentials, there was hardly anyone to compare with Kapadia the like of which no eye had seen, no heart conceived and no human tongue can adequately tell."

पाखंड धर्म नहीं, पाखंड जीवन को कष्टप्रद बना देता है

सीताराम गुप्ता

रविदास कहते हैं, "मन चंगा तो कठौती में गंगा। प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग–अंग बास समानी।" रविदास हों, कबीर हों, नानकदेव हों, तिरुवल्लुवर हों, हमारे सभी संत–महात्मा हमेशा धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने और उसका पालन करने पर ज़ोर देते रहे हैं। सभी ने धर्म के नाम पर प्रचलित आडंबरों का विरोध व खंडन किया है। आज लोगों ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए भले ही उनके मंदिर बना कर उनकी मूर्तियाँ स्थापित कर दी हों और उनकी पूजा भी करने लगे हों लेकिन कबीर जैसे संत ने तो मूर्तिपूजा का स्पष्ट रूप से खंडन किया है। कबीर कहते हैं :

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़,
उससे तो चक्की भली पीस खाय संसार।

अर्थात् यदि पत्थर या पत्थर की मूर्ति पूजने से भगवान मिलते हैं तो क्यों न मैं पहाड़ की ही पूजा करूँ? उससे (पत्थर की मूर्ति से) तो पत्थर से बनी आटा पीसने की चक्की अच्छी या महत्त्वपूर्ण है जिससे सारा संसार आटा पीस कर अपनी भूख मिटाता है। बड़े–बड़े शहरों और महानगरों के उपासना–गृहों के तो क्या कहने! आजकल तो कई मंदिर ऐसे भी बन गए हैं जहाँ श्रद्धालुओं का नहीं दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है। वे पर्यटन स्थल के रूप में ज़्यादा पहचाने जाने लगे हैं।

आज हम न केवल विशल व भव्य पूजा स्थलों का निर्माण कर रहे हैं अपितु धर्म व भक्ति के नाम पर प्रदूशण में भी खूब वृद्धि कर रहे हैं। जुलूस व शोभायात्राएँ निकाल कर आम नागरिकों के जीवन में मुश्किलें बढ़ा रहे हैं। छोटा या बड़ा कोई भी आयोजन क्यों न हो लाउडस्पीकर का इस्तेमाल आम हो गया है। कीर्तन व जागरण आदि के नाम पर इतना ध्वनि प्रदूशण होता है कि कुछ मत पूछिए। सभी धर्मों के धर्मस्थलों से सुबह–सुबह ही तेज़ आवाज़ में धार्मिकता बरसनी प्रारंभ हो जाती है जिससे बच्चों, बूढ़ों, बीमारों व रात की शिफ़्ट में काम करने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। आम नागरिक के जीवन को कष्टप्रद बनाने वाली क्रियाएँ धर्म नहीं हो सकतीं। ईंट–पत्थरों से निर्मितमंदिर–मस्जिद की उपयोगिता और धर्म के नाम पर शोर–शराबे की प्रवृत्ति का खंडन करते हुए कबीर ने तो स्पष्ट षब्दों में कहा है :

कांकर-पाथर जोड़ि के, मस्जिद लई चुनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहरा भया खुदाय।

प्रश्न उठता है कि आख़िर पूज़ा–स्थल और पूजा–पाठ के नाम पर शोर–शराबे की आवष्यकता ही क्या है? मंदिर को ही लीजिए। मंदिर एक पावन स्थल माना जाता है लेकिन यह श्रद्धालुओं अथवा आगंतुकों की भावना ही है जो किसी पूजा–स्थल अथवा इबादतगाह को पवित्रता का दर्जा देती है। यदि भावना शुद्ध–सात्त्विक है तो ईंट–पत्थरों से बने निर्जीव ढाँचे व लाउडस्पीकर लगाकर शोर करने की बिलकुल आवश्यकता नहीं है। वास्तव में आज भोली–भाली जनता को धर्मांध बनाकर अपना उल्लू सीधा किया जा रहा है। जो भी हो आज अधिकांष धर्म स्थल व्यक्ति और समाज के लिए आध्यात्मिक उन्नति के साधन व केंद्र न रह कर कुछ लोगों के लिए मोटी कमाई के स्रोत बन गए हैं। हमें धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझकर बाह्याडंबर से बचने का प्रयास करना चाहिए तभी हम सही मायनों में धर्म का पालन कर सकेंगे।

क्या संसार में शांति बनी रह सकती है?

भारतेन्दु सूद

पिछली सदी में संसार में शांति स्थापित करने के बहुत प्रयत्न किए गए। यू एन ओ की स्थापना भी की गई। फिर भी जिस तरह की शांति की उमीद की गई थी वह नहीं है। हां 19वी सदी से पहले जैसे हालात भी नहीं हैं जिसका मुख्य कारण था कि बड़ी शक्तियां दूसरे राज्यों पर विजय प्राप्त कर या उन को गुलाम बना कर अपना प्रभुत्व सथापित करना चाहती थी।

यह भी सत्य है कि वेदों में सारे ब्रहमांड में शांति के लिए प्राथना की गई है। फिर भी शांति नहीं है। प्रश्न उठता है कि विश्व शांति क्या सुनहरा सपना ही है या वास्तव में सम्भव है। नहीं यह सम्भव नहीं है, केवल एक सपना है। क्योंकि यह संसार तभी तक है जब तक कि इस में प्राणी है और मनुष्य है। मंगल आदि चाहे पृथ्वी की अपेक्षा कितने बड़े ग्रह हैं परन्तु क्योंकि उन में प्राणी का जीवन सम्भव नहीं इसलिए उन्हें संसार नहीं कहा जा सकता। जब प्राणी अर्थात मनुष्य है तो काम, अंहकार, लोभ, मोह, ईश्या द्वेश, क्रोद्ध सभी होंगे जैसे कि बादलों के होने पर बारिश होना स्वभाविक है। जब यह अवगुणी शक्तियां हो तो शांति की अपेक्षा करना सुनहरा सपना देखना ही है।

यह कहा गया है कि जब आदमी पैदा होता है तो शुद्र ही होता है। ब्राहमण अर्थात विद्वान तो वह मानविय गुणों को धारण ही बनता है। वरना शुद्र ही रहता है। परन्तु क्या सभी मानव का चोला पहन कर सही रूप में मानव बनते हैं। नहीं। सच्चाई यह है कि बहुत थोडें ही मानव बनते है और अधिक पशु ही रहते हैं। यही कारण हे कि सब तरह के प्रयत्न करने पर भी संसार में शांति सम्भव नहीं है।

हम बारिश में चलेंगे तो हम गीले भी होगें परन्तु अपने को बचाने के लिए यदि छाता ले लेतें हैं तो उतने गीले नहीं होगे। इस संसार में रहते हुए यह अध्यात्मिक ज्ञान ही छाता है। इस अध्यात्मिक ज्ञान का सुत्र है वेद व उपनिशद। यदि हम अध्यातमबाद की और झुके रहते हैं तो संसार में जो अवगुण रूपी बारिश हो रही है उस सें बहुत हद तक बचे रहेंगे।

परन्तु यदि संसार है तो अवगुण रूपी बारिश भी होगी। हर एक व्यक्ति ज्ञान के अभाव में अपने आप को गीला होने से नहीं बचा सकता। जब अवगुणों की बारिश में गीले होगें तो अशांति होगी ही।

श्री कृष्ण गीता में कहते है कि हे मनुष्य यदि तू इस संसारिक अशांति सें बचना चाहता है तो मेरी शरण में आ जाओ। अर्थात तू परमात्मा के साथ जुड़ जा। परमात्मा का साथ ही छाता है जो कि इस संसार की बारिश में तुझे बचाए रखेगा और गीला नहीं हो देगा।

याद रखें संसार में कभी शांति नहीं होगी परन्तु आप अध्यात्मवाद के छाते के नीचे रहकर अपने आप को शांत रख सकते है। कोई भी प्रश्न कर सकता है कि यह स्वयं की शातिं का क्या फायदा जब कि आसपास अशांति है, याद रखें कि आप सब को नहीं बदल सकते। हां अपने खुद के आचरण से दूसरो के लिए दीपक का काम कर सकते है। इसालिए पहले अपने आप को शांत रखने के लिए अध्यात्मवाद की तरफ झुकें।

वेदों का परिचय और महत्व

डॉ. ममता मेहता

वेद ईश्वरिय ज्ञान है जो कि ईश्वर ने मानव की भलाई के लिए चार ऋषियों को दिया था । हिंदू धर्म का सर्वोच्च एवं सर्वोपरि ग्रंथ है। वेद जगत के सभी ग्रंथों में सबसे पुराना धर्म ग्रंथ है। यह पूर्णतया ऋषियों द्वारा सुने गए ईश्वरिय ज्ञान पर आधारित है, इसलिए इसे श्रुति कहा जाता है। वेद संस्कृत के शब्द 'विद्' से निर्मित है, जिसका अर्थ 'ज्ञान' होता है।

चार वेद हैं, निम्नानुसार हैं-

१ ऋग्वेद

वेदों में सबसे पहला वेद ऋग्वेद है, जो पद्यात्मक है। ऋग्वेद में 10 मंडल, 1028 सूक्त तथा 11 हजार श्लोक हैं। शाकलप, वास्कल, आश्रमलायन, शाखाएं, मांडूकायन इसके पांच क्रम हैं। इसमें देवताओं के आववान के मंत्र हैं।

२ यजुर्वेद-

यजुर्वेद में अधिकतर यज्ञों के नियम और विधान हैं, इसलिए यह वेद कर्मकांड प्रधान भी कहा जाता है। यजुर्वेद वेद की दो शाखाओं में बताया गया है– शुक्ल और कृष्ण।

3 सामवेद

यह गीत संगीत का मुख्य वेद है। प्राचीन आर्यों द्वारा सामवेद का गान किया जाता था। सामवेद में 1875 श्लोक हैं। इसमें 1504 ऋग्वेद से लिये गए हैं। इसमें 75 ऋचाओं तथा तीन शाखों में ऋषि अग्नि और इंद्र आदि देवी देवताओं का वर्णन है। सामवेद में सभी वेदों का सार समाहित है।

४ अथर्ववेद

महर्षि अगिरा द्वारा रचित अथर्ववेद में 20 अध्याय, 730 सूक्त, 5687 श्लोक और 8 खंड हैं। देवताओं की स्तुति के साथ चिकित्सा, आयुर्वेद, रहस्यमई विधाएं, विज्ञान आदि शामिल है। ब्रह्मा जी की सर्वत्र चर्चा होने के कारण इस वेद को ब्रह्मा वेद भी कहा गया है।.

वेदों का महत्व

वेद सनातन धर्म का मूल आधार हैं। यही एकमात्र ऐसे ग्रंथ हैं, जो आर्यों की संस्कृति और सभ्यता की पहचान कराते हैं। मनुष्य ने अपने बाल्यकाल से धर्म और समाज का विकास केवल वेदों से किया है। वेदों में मानव के जीवन जीने की कला मिलती है। वेदों में वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम पद्धति की जानकारी के साथ रीति–रिवाज एवं धर्म का वर्णन

और विभिन्न व्यवसायों की जानकारी दी गई है।।

जैमिनीा, पाराशर, कात्यायन, याज्ञवल्क्य, व्यास आदि ऋषि प्राचीन काल के वेद वक्ता रहे हैं।

वेदों के आधार पर अन्य लोगों ने ग्रंथों का निर्माण किया है।

वेद हमारी संस्कृति की जड़ हैं और ज्ञान विज्ञान का अथाह भंडार है। वेदों में देवी देवताओं, ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, औषधि, विज्ञान, भूगोल, धर्म, संगीत और रीति रिवाज से जुड़ी जानकारी मिलती है। वेदों में समाज के कल्याण के बारे में भी बताया गया है।

भारतीय भाषाओं का मूल स्वरूप वेद की भाषा संस्कृत है। वेद भौतिक सुख सुविधाओं तथा लाभों

को प्राप्त करने के साधन बताने के साथ मोक्ष प्राप्ति का मार्ग भी बताते हैं।

वेदों का ज्ञान सूर्य के प्रकाश के समान समस्त सृष्टि के पोषण एवं कल्याण के लिए है न कि किसी खास जाति या समुदाए के लिए। वेद में मनुष्य जीवन की प्रमुख समस्याओं का समाधान है।

वेदांग

वेदों के अध्ययन में सहायक ग्रंथ को वेदांग कहते हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद और निरुक्त ये छः वेदांग हैं। इसमें छंद को वेदों का पाद, कल्प हाथ, ज्योतिष नेत्र, निरुक्त कान, शिक्षा नाक और व्याकरण को मुख कहा गया है। ये वेदांग के 6 अंग है जो वेदों के सम्यक और पूर्ण अर्थ को समझने के लिए उपयोगी है।

1 शिक्षा– इसमें वेद मंत्रों के उच्चारण करने की विधि बताई गई है। स्वर एवं वर्ण आदि के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य वेद मंत्रों के विशुद्ध उच्चारण किया जाना है।

2 कल्प– वेदों के किस मंत्र का प्रयोग किस कर्म में करना चाहिए यह इस वेदांग में बताया गया है। कल्प वेद प्रतिपादित कर्मों का भली भांति विचारइअप्रस्तुत करने वाला शास्त्र है। इसमें यज्ञ संबंधी नियम दिए गए हैं।

3 व्याकरण– वेद शास्त्र का प्रयोजन तथा शब्दों के यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करने के लिए इसका अध्ययन आवश्यक होता है। इस संबंध में पाणिनीय व्याकरण ही वेदांग का प्रतिनिधित्व करता है।

4 निरुक्त– वेदों में जिन–जिन शब्दों का प्रयोग जिन–जिन अर्थों में किया गया है उनके उन उन अर्थों का निश्चयात्मक रूप से उल्लेख निरुक्त में किया गया है। इसे वेद की आत्मा भी कहा जाता है।

5 ज्योतिष– इससे वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों का समय ज्ञात होता है। यज्ञ कर्म में प्रवृत्त होते हैं, यज्ञ काल के आश्रित होते हैं और ज्योतिष शास्त्र से काल का ज्ञान होता है। अनेक वैदिक पहेलियों का ज्ञान भी बिना ज्योतिष के नहीं हो सकता।

6 छंद– वेदों में प्रयुक्त गायत्री, उष्णिक आदि छंदों की रचना का ज्ञान छंद शास्त्र से होता है।

इस प्रकार वेदांगों का ज्ञान वेद का उत्तम बोध होने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

गुरु-शिष्य परंपरा

विशाल सोनी

भारत में शिक्षा का महत्व सदियों से स्थापित रहा है और इस शिक्षा की नींव गुरु–शिष्य परंपरा पर आधारित रही है। इस परंपरा में गुरु शिक्षक और शिष्य विद्यार्थी के बीच का संबंध केवल ज्ञान के आदान–प्रदान तक सीमित नहीं था, बल्कि यह जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन का प्रतीक था। हम जानते हैं कि राजा दशरथ के बेटों श्री रामचन्द्र व उनके भाईयों को गुरू विश्वामित्र ने न केवल शस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान दिया बल्कि उनके विवाह के लिए उपयुक्त वर भी उन्ही ने तलाशे व राजा दशरथ ने झुक कर स्वीकार किया। इस तरह गुरू को शिष्य को जीवन का सच्चा मार्गदर्शक माना गया है, जो न केवल शिष्य को शिक्षा देता है, बल्कि उसे जीवन के सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

प्राचीन भारत में गुरु–शिष्य परंपरा का बड़ा महत्व था। गुरुकुल व्यवस्था के अन्तगत विद्यार्थी अपने गुरु के सान्निध्य में शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा और आदर भाव से शिष्य अपने जीवन को संवारते थे। गुरु न केवल शास्त्रों का ज्ञान देते थे, बल्कि शिष्यों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करते थे। इस परंपरा

में गुरु का स्थान अत्यंत ऊंचा था और शिष्य के लिए अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना परम कर्तव्य माना जाता था।

गुरु–शिष्य परंपरा के इस समृद्ध इतिहास के सम्मान में भारत में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। यह दिन 5 सितंबर को महान शिक्षाविद् और भारत के दूसरे राष्टंपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन ए महान शिक्षक, दार्शनिक और विद्वान थे, जिन्होंने अपने जीवन को शिक्षा के माध्यम से समाज को मार्गदर्शन देने के लिए समर्पित किया।

शिक्षक दिवस का उद्देश्य न केवल शिक्षकों के प्रति सम्मान प्रकट करना है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान की सराहना करना भी है। इस दिन विद्यार्थी अपने शिक्षकों को उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा के लिए धन्यवाद देते हैं और उनके प्रति अपने सम्मान को व्यक्त करते हैं।

आज के तकनीकी युग में शिक्षा का स्वरूप भले ही बदल गया हो, लेकिन गुरु–शिष्य परंपरा की महत्ता आज भी बनी हुई है। जहां शिष्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अवने गुरूओं का सम्मान करें वहीं शिक्षकों को भी यह कर्तवय बनता है कि वह कहां तक एक शिक्षक के रूप में अपने कर्तवय को निभा रहें है। क्या वह अपने शिष्यों को विषय के ज्ञान के अतिरिक्त जीवन में सही निर्णय लेने, नैतिक मूल्यों का पालन करने और समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं।

शिक्षक दिवस हमें इस परंपरा की भी याद दिलाता है और यह संदेश देता है कि शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन को संवारने और समाज को बेहतर बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षक दिवस के माध्यम से हम सभी शिक्षकों को उनके अतुलनीय योगदान के लिए नमन करते हैं और शिक्षक व शिष्य दोनो इस परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं।

प्रकाश की गति वैदिक काल का अन्वेषण या इस युग की खोज

उन्होंने दयानन्द से कहा कि गुरू दक्षिणा के रूप में, मैं यह चाहता हूं कि समाज में फैले अन्ध विश्वास और कुरीतियों को समाप्त करो।

बचपन से ही हमें स्कूलों में पढ़ाया गया है कि प्रकाश की गति की खोज डेनमार्क के खगोलविद ओले क्रिस्टेंसेन रोमर ने की थी. साथ ही कहा जाता है कि रोमर से पहले गैलीलियो और न्यूटन जैसे महान वैज्ञानिक काफी प्रयास के बाद भी प्रकाश के वेग को नहीं जान पाए थे. हालांकि गैलीलियो इतना तो समझ गए थे कि ब्रह्मांड में प्रकाश की गति सबसे तेज है, लेकिन वे ये कभी नहीं जान पाए कि वास्तव में प्रकाश की गति है कितनी? अंततः रोमर ने पहली बार 1676 में प्रकाश का वेग निर्धारित किया था.

जबकि वास्तविकता काफी चौंकाने वाली है. क्योंकि आधुनिक समय में महर्षि–सायण, जो वेदों के महान भाष्यकार थे, ने 14वीं सदी में प्रकाश की गति की गणना कर डाली थी, जिसका आधार ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 50वें सूक्त का चौथा श्लोक था. ऋग्वेद का यह श्लोक कहता है–

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य विश्वमा भासि रोचनम्।। 1⁄4ऋग्वेद 1.50.41⁄2

अर्थात् हे सूर्य. तुम तीव्रगामी, सर्वसुन्दर तथा प्रकाशके दाता और जगत् को प्रकाशित करने वाले हो. उपरोक्त श्लोक पर टिप्पणी करते हुए महर्षि सायण ने निम्न श्लोक प्रस्तुत किया था–

तथा च स्मर्यते योजनानां सहस्त्रं द्वे द्वे शते द्वे

च योजने एकेन निमिषार्धेन क्रममाण नमोऽस्तुते।

सायण ऋग्वेद भाष्य

अर्थात् आधे निमेष में 2202 योजन का मार्ग क्रमण करने वाले प्रकाश तुम्हें नमस्कार है. इस श्लोक से हमें प्रकाश के आधे निमिष में 2202 योजन चलने का पता चलता है. अब हम समय की इकाई निमिष तथा दूरी की इकाई योजन को आधुनिक इकाईयों में परिवर्तित कर सकते हैं. किन्तु उससे पूर्व हम प्राचीन समय तथा दूरी की इन इकाईयों के मान को जान लेते हैं. इस बारे में हमारी मनुस्मृति कहती है–

निमेषे दश चाष्टौ च काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कलाः।

त्रिंशत्कला मुहूर्तः स्यात् अहोरात्रं तु तावतः।।

इसके अनुसार पलक झपकने के समय को 1 निमिष कहा जाता है। इस प्रकार, 18 निमीष 3⁄4 1 काष्ठ; 30 काष्ठ 3⁄4 1 कला; 30 कला 3⁄4 1 मुहूर्त; 30 मुहूर्त 3⁄4 1 दिन व रात 1⁄4लगभग 24 घंटे1⁄2। अतः एक दिन 1⁄424 घंटे1⁄2 में निमिष हुए– 24 घंटे 3⁄4 30ग30ग30ग183⁄4 4,86,000 निमिष जबकि, आधुनिक गिनती की इकाई के हिसाब से 24 घंटे में सेकेंड हुए– 24ग60ग60 3⁄4 86,400 सेकंड इस तरह, 86,400 सेकंड 3⁄44,86,000 निमिष अतः 1 सेकंड में निमिष हुए– 1 निमिष 3⁄4 86400 / 486000 3⁄4 0.17778 सेकंड। अंततः, 1 / 2 निमिष 3⁄4 0.17778 / 2 3⁄4 0.08889 सेकंड

इसी तरह अगर हम योजन की बात करें तो, श्रीमद्भागवतम् 3.30.24, 5.1.33, 5.20.43 आदि के अनुसार 1 योजन 3⁄4 8 मील लगभग, तो, 2202 योजन 3⁄4 8 ग 2202 3⁄4 17,616 मील

अब हम अपने ऋग्वेद में उल्लेखित प्रकाश की गति को यदि आधुनिक गणना पद्धति में बिठाते हैं, तो हम पाते हैं कि सूर्य

प्रकाश 1 / 2 1⁄4आधे1⁄2 निमिष में 2202 योजन चलता है, अर्थात् 0.08889 सेकंड में 17,616 मील चलता है, अर्थात् 0.08889 सेकंड में प्रकाश की गति 3⁄4 17,616 मील। तो, 1 सेकेंड में 3⁄4 17,616 / 0.08889 3⁄4 1,98,177 मील 1⁄43,18,934.966 किलोमीटर1⁄2 लगभग हैरानी की बात है कि आधुनिकतम विज्ञान भी प्रकाश गति को. 1,86,000 मील 1⁄42,99,337.984 किलोमीटर1⁄2 प्रति सेकंड ही बताती है. कहने का मतलब है कि खगोल विज्ञान के

जिस ज्ञान को आधुनिकतम विज्ञान ने 1676 में खोजा और बताया, वह ज्ञान तो हमारे ऋग्वेद में हजारों लाखों साल पहले से ही उल्लेखित है. इसका मतलब हुआ कि जिस समय ये पश्चिमी सभ्यता के लोग जंगलों में नंग–धड़ंग रहते थे और चूहे–बिल्ली आदि मारकर खाया करते थे, उस समय हमार विद्वान ऋषि–मुनि खगोलशास्त्र और विज्ञान में अंतरिक्ष की गहराइयाँ एवं प्रकाश की गति नाप रहे थे, क्योंकि हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि ऋग्वेद को निर्विवाद रूप से मानव सभ्यता का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना जाता है. हमारी ऐसी अनमोल उपलब्धियों के कारण हमें अपने धर्मग्रंथों तथा अपने सनातन धर्मपर आखिर क्यों गर्व नहीं होना चाहिए?

जीवन के 19 उंट

एक गांव में एक व्यक्ति के पास 19 उंट थे । रेगिस्तान का ईलाका था, वहां उंट ही सब से बड़ी सम्पदा माने जाते थे। एक दिन जब उसकी मृत्यु हो गई तो उसकी वसीयत पढ़ी गई, जिस में लिखा था,

मेरे 19 उटों में से आधे मेरे बेटे को, एक चोथाई मेरी बेटी को और पांचवां हिस्सा मेरे जीवन भर सेवा करने वाले नोकर को दे दिए जाएं।

सब लोग दुविधा में थे कि बटवारा कैसे हो? 19 का आधा अर्थात एक उंट तो काटना ही पढेगा। काट दिया तो उंट किस काम का? चलो एक काट भी दिया तो फिर बचे 18, यदि उसका एक चोथाई करेंगे तो एक उंट फिर काटना पढेगा। सब बड़ी उलझन में थे। पास के गांव में उसका एक मित्र रहता था। उस तक भी यह बात पहुंची।

अगले दिन उसका वह मित्र उंट पर चड़ कर आया और बोला इन 19 उंटों में मेरा उंट भी मिला दो और बटवारा कर दो।

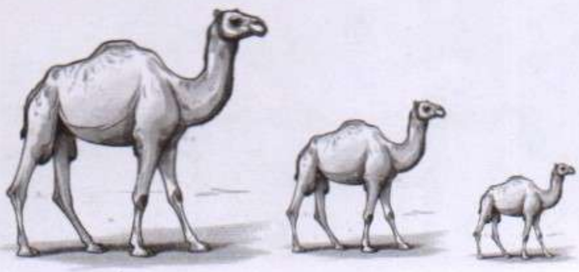

19. मे एक डाला तो 20 हो गए।

20 का आधा 10 बेटे को दे दिए।

20 का चोथाई 5 बेटी को दे दिए।

20 का पांचवा हिस्सा 4 नोकर को दे दिए।

10 जमा 5 जमा 4 हो गए 19

एक उंट जो बच गया वह उस बुद्धिमान मित्र ने बापिस ले लिया और बापिस अपने गांव लोअ गया। एक उंट मिलाने से बाकी 19 का बंटवारा सुख शाति व आनन्द से हो गया।

हमारे जीवन में भी इसी तरह 19 उंट होते है।

5 ज्ञानेद्रियां––आंख, नाक,जीभ, कान व त्वचा

5 कर्मेद्रिया––हाथ, पैर, जीभ, मुत्रद्वार व मलद्धार

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

IN MEMORY OF DHRUV ON HIS BIRTHDAY

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 70 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,
Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

J L KHURANA

CHARU JAIN

ABHA POPLI

O P NANDWANI

CHITKARA MADAN LAL

DR ANSHU SHARMA

BIDYUT KUMAR

O P SETIA

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

DIPLAST

TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972

FOR BETTER HOMES

ISO

48 Years

Learn Waste Segregation & Composting on Zoom Meeting Contact : 9041655102

IS : 12701 Water Storage Tanks — Diplast Water Storage Tanks

IS : 4985 PVC Pressure Pipes — Diplast PVC Pressure Pipes

IS : 9537 PVC Electrical Conduits — Diplast PVC Electrical Conduits

IS : 13592 PVC SWR Pipes — Diplast PVC SWR Pipes

DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)

Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh 9217970381 and 0172-2662870